भूमिका।

सर्वमान्य सिद्धान्त है कि इस महाविकराल कलिकाल में मनुष्य के उद्धारके लिये हरिनामसे बढ़कर कोई उपाय नहीं है ॥

हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलम्।
कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा ॥

परन्तु भगवन्नाम जपनेको जब मनुष्य मालाहाथमें लेकर बैठताहै तो चंचल मन हज़ारों कोस दूर भागता है और बिना मनके लगे जप तप आदि सारे साधन व्यर्थहैं इस कारणसे मनकी एकाग्रता परम आवश्यक ठैरी।

यदि चित्तवृत्तिनिरोधके लिये प्राणायाम आदि योगाभ्यास किया जायतो यम नियम आदि साधनोंके बिना अधिकार प्राप्त नहीं होता और उन साधनों का होना वर्तमानकालमें अतिकठिन है ॥

अब मनकी एकाग्रता क्योंकरहो इसके लिये जहांतक महात्माओं का अनुभवहै संगीतसे बढ़कर कोई उपाय नही सिद्ध होता मीठी सुरीली आवाज़में वो सामर्थ्य हैकि हिरन जैसा चंचल पशू मधुर राग औरवा द्यको सुनकर निश्चल होकर खड़ा रहजाता है और प्राणोंतककी उसे कुछ परवाह नही रहती।

बड़े २ ज़हरीले नाग मधुरध्वनि पर मोहित होकर फणोंको नचा नचा कर आनन्दमें मग्न होजाते हैं और जब पशुओंकी यह दशातौ मनुष्यको चित्तवृत्ति गाना सुननेके समय और स्वयं गाते वक्त निरुद्ध नहो ऐसा सम्भव नही होसकता।

इसी वास्ते कहा है कि—ज्ञानात् परतरं ध्यानं ध्यानात्पर

तरं जपः ॥ जपोत्परतरं गानं गानात्परतरं नहि ॥

गायन से परे कोई साधन मनकी एकाग्रता का नहीं है स्वयं भगवान्भी आज्ञा करते हैं कि "नाहं वसामि वैकुंठे योगिनां हृदयेन च। मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद", जहां भक्त गानकरैं तहांमें अवश्य स्थित रहताहूं वैकुण्ठ और योगियोंके हृदयमेंकठिनाईसेपाताहूं।

अत एव भगवन्नामका गान होने से एकतो मन विना प्रयास निश्चल होजात है दूसरे जिस स्थलमैं हरिगुणगान होता है अवश्य भगवान् वहां विद्यमान होजाते हैं और भक्तोंके अन्तःकरण में प्रेम पदार्थ किसी अन्य उपायके बिना सहजही उत्पन्न होजाता है।

इन कारणों से अवश्य समझागया कि भगवत् नामों और गुणोंका गान करने के लिये कोई कीर्तनसंग्रह पुस्तक निर्माणकिया जाय।

यद्यपि इससे पहले गायन सम्बन्धी कितनेही पुस्तक मुद्रित होकर प्रकाशित होचुके हैं तथापि उनमें नाम गानार्थ पद्य नथे केवल भगवत् चरित्रऔर लीलाओंका गानथा।

इसलिये इस पुस्तक में विशेष करके हरिनाम कीर्तन मुख्य रक्खा गया है हरिजनोंसे आशाहै कि इसके द्वारा लाभ प्राप्त करके इस महापांतकी अधमशरीर कोभी कृतार्थ करैंगे।

हरीनाम कीर्तन निमित रचित भयो यह ग्रन्थ।
या द्वारासहजहि मिलै हरी प्रेमको पन्थ ॥
हरीनाम गाये सुने मिटै सकल भवक्लेश।
अमितप्रेम उपजे हिये करै कृपा मथुरेश ॥

निवेदक—मथुराप्रसादः

॥ अथ श्री मथुरेश माधवाष्टक लिख्यते



१—श्री गोपाल दयाल लाल सुनलो मैं हूं महा लालची,
अत्याचारि अनीति नित्य करता डरता नहीं नेकहू ॥
तोरी तात दयालुता अतितकी तातैं निचीतो रह्यो,
हे माधो मथुरेश या अधमपै जल्दी कृपा कीजिये ॥ १ ॥

२—धाये नाथ अनेकरूप धरके धारा वही धर्मकी,
मारे रावण से सबी सुर अरी कंसादि सारे वली ॥
मोकों मन्मथ मन्यु मोह मद हैं मारचो चहैं दैत्य ये,
हे माधौ० ॥ २ ॥

३—मेरे औगुण से क्षमा शतगुणी स्वामी सुनी आपकी,
गाढ़े गाहकहौ गरीब जनके गो गोप गोपी पती ॥
दानी दीन दयालु होय हमरी नादानि देखौ कहा,
हे माधौ० ॥ ३ ॥

४—काहूको नहि कोइ रक्षक करी सारी वृथा कल्पना,
मेरे पुत्र कलत्र प्राणपति ये भ्राता पिता आदि हैं ॥

पुरानी है नैया नहि ढिग खिवैया लख परै,
कृपा चाहूं तेरी अब जननि देरी जिन करौ ॥ ४ ॥

५—रिझाये बन्वारी अमित हितकारी जननके,
दिखाई दातारी जब जब पधारी अवनिपै ॥
हमारीही बारी किस विध विसारी सुध अहो,
कृपा चाहूं तेरी अब जननि देरी जिन करौ ॥ ५ ॥

६—पचे ज्ञानी ध्यानी श्रुति गति न जानी थकित हो,
गिरा हूँ बौरानी मन रुकुच मानी अहिपती ॥
कहा मेरी शक्ती कछुक नहि जुक्ती लघुमती,
कृपा चाहूं तेरी अब जननि देरी जिन करौ ॥ ६ ॥

७—तरे धर्मी कर्मी विदित श्रुतिमर्मी जन घने,
तरे सेवा चारी अचरज कहा री चित धरौ ॥
हमारे से तारे अति जस तिहारे कर परै,
कृपा चाहूँ तेरी अब जननि देरी जिन करौ ॥ ७ ॥

८—न संसारी वस्तू नहि अज महेन्द्री पद चहूं,
रहूँ तेरे नेरो पद युगल चेरो महलको ॥
हरौ दूरी पूरी करहु मथुरा आस मनकी,
कृपा चाहूँ तेरी अब जननि देरी जिन करौ ॥

॥ इति राधाष्टकम् ॥

॥ अथ श्री मथुरेश माधवाष्टकं लिख्यते ॥



१—श्री गोपाल दयाल लाल सुनलो मैं हूं महा लालची,
अत्याचारि अनीति नित्य करता डरता नहीं नेकहू ॥
तोरी तात दयालुता अतितकी तातैं निचीतो रह्यो,
हे माधौ मथुरेश या अधमपै जल्दी कृपा कीजिये ॥ १ ॥

२—धाये नाथ अनेकरूप धरके धारा वही धर्मकी,
मारे रावण से सवी सुर अरी कंसादि सारे बली ॥
मोकों मन्मथ मन्यु मोह मद हैं मारयो चहैं दैत्य ये,
हे माधौ० ॥ २ ॥

३—मेरे औगुण से क्षमा शतगुणी स्वामी सुनी आपकी,
गाढ़े गाहकहो गरीव जनके गो गोप गोपी पती ॥
दानी दीन दयालु होय हमरी नादानि देखो कहा,
हे माधौ० ॥ ३ ॥

४—काहूको नहि कोइ रक्षक करी सारो वृथा कल्पना,
मेरे पुत्र कलत्र प्राणपति ये भ्राता पिता आदि हैं ॥

पुरानी है नैया नहि ढिग खिवैया लख परै,
कृपा चाहूं तेरी अब जननि देरी जिन करौ ॥ ४ ॥

५—रिझाये बन्वारी अमित हितकारी जननके,
दिखाई दातारी जब जब पधारी अवनिपै ॥
हमारीही बारी किस विध बिसारी सुध अहो,
कृपा चाहूं तेरी अब जननि देरी जिन करौ ॥ ५ ॥

६—पचे ज्ञानी ध्यानी श्रुति गति न जानी थकित हो,
गिरा हूँ बौरानी मन सकुच मानी अहिपती ॥
कहा मेरी शक्ती कछुक नहि जुक्ती लघुमती,
कृपा चाहूं तेरी अब जननि देरी जिन करौ ॥ ६ ॥

७—तरे धर्मी कर्मी विदित श्रुतिमर्मी जन घने,
तरे सेवा चारी अचरज कहा री चित धरौ ॥
हमारे से तारे अति जस तिहारे कर परै,
कृपा चाहूँ तेरी अब जननि देरी जिन करौ ॥ ७ ॥

८—न संसारी वस्तू नहि अज महेन्द्रो पद चहूं,
रहूँ तेरे नेरो पद युगल चेरो महलको ॥
हरौ दूरी पूरी करहु मथुरा आस मनकी,
कृपा चाहूँ तेरी अब जननि देरी जिन करौ ॥

॥ इति राधाष्टकम् ॥

हा हा नाथ गहोजि हाथ विरहा सिन्धु डुबायो चहै,
हे माधौ मथुरेश या अधमपै जल्दी कृपा कीजिये ॥ ८ ।

॥ इति माधवाष्टकम् ॥

॥ अथ श्री मथुरेशविनयाष्टकं लिख्यते ॥

(चाल लावनी)



१—सरकार युगलवर तनक दया विस्तारौ,

मो दीन महा मति हीन की ओर निहारौ ॥
करुणानिधान हैं आप दीन दुखहारी,
शरणागतवत्सल आरत जन सुखकारी ।
छाई तव कीरति नाथ त्रिलोक मझारी,
जस गावत नितप्रति शेश शारदा हारी ।
या तुच्छ जीवके दूजो नाहि सहारो,
सरकार युगलवर तनक दया विस्तारौ ॥१॥

२—भवसिन्धु अगाध अपार तर्यो नहि जावै,
कोउ दीखत नाहि जो बेड़ा पार लगावै ।
कामादिग्राह मुखफाड़ ग्रसन कौं आवैं,

नहि कोइ उपाय जो इनसें वचने पावे ।
अस संकट में नहि कोइ भी हितू हमारो,
सरकार० ॥ २ ॥

३—हौं यदपि कुकर्मी कुटिल कपटि अपराधी,
उद्धार हेत भर जन्म जुगति नहि साधी ।
अति माया मोहकी लागी दुस्तर व्याधी,
नहि योग यज्ञ तप सधै न ध्यान समाधी ।
है तुमहि कों लज्जा मारी चाहि उवारो,
सरकार० ॥ ३ ॥

४—अस भाग कहां जो प्रभुके दर्शन पाऊँ,
छवि गौर-श्याम अभिराम पै बल बल जाऊँ ।
छिनमात्र युगलकों हियसे नहि बिसराऊँ
निस वासर नैनन नेह नीर ढरकाऊँ ।
जग माया मोहसें वेग होय छुटकारो,
सरकार० ॥ ४ ॥

५—धिक् जीवन धिक् मानुषतन धिक् चतुराई,
मनमोहनि सोहनि झांकी यदि नहि पाई ।
धिक् संपत् धिक् जस कीरत मान बड़ाई,

छवि गौर-श्याम की नैनन नाहिं समाई ।
विन चरण-कमल नख जोति सकल अंधियारो,
सरकार०॥ ५ ॥

६—कब दर्षोगे हा हा नाथ दरस कब दर्षोगे,
कब मो अनाथको नाथ सनाथ करोगे ।
कहा निपट कुटिल मोहि जान खबर नहि लोगे,
जन डूबत देखहु कहा न बाँह गहोगे ।
तुम विन है दूजो कौन प्राण रखवारो,
सरकार० ॥ ६ ॥

७—हे कृपानाथ जन दुखहर सुघर मनोहर,
हे रूप उजागर सुन्दर अनुपम छविधर ।
हे कमलनयन सुख दैन ऐन करुणा कर,
गुणसागर नागर नवलकिशोर रसिकवर ।
इक कृपा कटाक्ष इस ओर गौर कर डारो ।
सरकार० ॥ ७ ॥

८—मथुराके ईश दयाल कहे जाते हौ,
जन दुखी देख कहा तनक न लजियाते हौ ।

अति प्यासे मीन दृगन कों तरसाते हौ,
रह निकट भी झांकी देते सकुचाते हौ।
जन आरतिभंजन प्रणतो आजि न विसारौ,
सरकार युगलवर तनक दया विस्तारौ ॥ ८ ॥

॥ इति श्री मधुरेशविनयाष्टकम् ॥

श्रीमन्नारायण नारायण नारायण, (टेक)

१—मच्छ कच्छ वामन सूकर तन,
जन रक्षा हित धारायण ॥ १ ॥ श्री०
२—धर नर हरि तन हत्यो हिरनाकुश,
भक्त प्रहलाद उबारायण ॥ २ ॥ श्री०
३—श्रीजगवन्दन दशरथनन्दन,
गुण गावत जाके रामायण ॥ ३ श्री०
४—भिलनीसी नीच पखान अहिल्या,
व्याध गीध निस्तारायण ॥ ४ ॥ श्री०
५—नन्दनन्दन प्रभु असुरनिकन्दन,
लीला प्रेम प्रचारायण ॥ ५ ॥ श्री०
६—भवसागर तरणी श्री गीता,
वरणी सब श्रुति सारायण ॥ ६ ॥ श्री०

७—द्रुपद सुताको लज्जा राखी,
दुःशासन मद गारायण ॥ ७ ॥ श्री०
८—डूबत गज हरि नाम पुकारा,
प्यादे हि पांव पधारायन ॥ ८ ॥ श्री०
९—पतितनको सिरताज अजामिल,
तरयो सुमिर सुत नारायण ॥ ९ ॥ श्री०
१०—नामा नरसी कबीर से जन हित,
पायो खेद अपारायण ॥ १० ॥ श्री०
११जन औगुण चितमें नहि लावत,
पतित अनेक उद्धारायण ॥ ११ ॥ श्री०
१२—मो सम दीन मलीन किरीरन,
तारि सुजस विस्तारायन ॥ १२ ॥ श्री०
१३—तुम्हरी हि आस तिहारो भरोसो,
निज प्रण लेहु संभारायन ॥ १३ ॥ श्री०
१४—मथुरापति दीजै चरणन रति,
सकल विपति दुख टारायन ॥ १४ ॥ श्री०

हरि हरये नमः ।
कृष्ण यादवाय नमः ।

यादवाय माधवाय केशवाय नमो नमः ।
गोविन्द गोपाल राम श्री मधुसूदन ॥

---

* श्री हरिकीर्त्तनम् *

—○:*:○—

१—श्री हरि ब्रजाङ्गनामनोविहारिणे नमः ।
कृष्ण यादवाय चित्त वित्त हारिणे नमः ॥
२—केशवाय माधवाय मोदकारिणे नमः ।
श्यामसुन्दराय गोपवेश धारिणे नमः ॥
३—इन्द्रमान भंजनाय दुष्ट दैत्य गंजनाय ।
गोपिका दृगंजनाय नौमि भक्त रंजनाय ॥
४—श्री गोविन्द गोकुलेन्दु वेणु धारिणे नमः ।
प्राणवल्लभाविनोद कर्मचारिणे नमः ॥

---

* श्री हरिकीर्त्तनम् *

—:(::):—

[ग़ज़ल]

१—राधागोविन्द केशव माधव हरे हरे ।
जय दीनबन्धु दयासिन्धु कृष्ण सांवरे ॥ रा०

२—जय मन हरन आनँद करन श्याम घन वरन।
अशरन शरन त्रिताप हरन वेणु मुख धरे॥ रा०
३—असुरारि दुःखहारि क्षमाधारि प्रेमधन।
राधारमन मदन दमन अखण्ड रसभरे॥ रा०
४—महिमा अपार कृपाधार करुणा सार तन।
मधुरासे अधम जाकी दया दृष्टि सें तरे॥ राधा०

[पद]

१—कीरति कुमारी प्यारी स्वाम्नी हमारी हो,
नवलविहारी स्वामी जन सुखकारी हो।
२—नीलवरन सारी श्यामागोरी तनधारी,
मेघ घटामें मानो शशि उजियारी हो। की०
३—पीतवसन मनमोहन के तन मानो,
दामिनी मण्डल बिच छाई घटा कारी हो। की०
४—दम्पति दयाके निधि दीनन के दुखहारी,
करुणा अपारी दोउ अधम उद्धारी हो। की०
५—राधे गिरिधारी जय सन्तन के हितकारी,
मधुराके स्वामी प्यारे युगल विहारी हो। कीरति०

[पद]

१–सांवरा सुघर म्हारा गिरधर प्यारा हो-श्यामसुन्दर०
राधावर चितहर नैननको तारा हो।
२–सीस मुकट कटि काछनी सोहत तन,
मोहत मनहि कर रस मतवारा हो। सां०
३–अलख अलख श्रुति कहे जो अगोचर,
मदन मोहन सोई नर तन धारा हो। सां०
४–विन दर्शन पल छिन कल नाहि मोय,
विकल हियो छै म्हारो अतिही दुखारा हो। सां०
५–आवोजी आवोजी थांका चरण पलोटाँ म्हे,
मथुरापति म्हारा जीवन आधारा हो। सां०

[पद]

१–जय द्वारकाधीश मुकुन्द हरी श्री वासुदेव गोविन्द हरी।
हरी हरी बोलो हरी हरी॥

२–हरि झांकी जिहि दृष्टि परी-तिनकी नैया भवसिन्धु तरी।
हरी हरी बोलो हरी हरी॥

३—सांवरि सूरत हिये धरी-हरिने जनकी सब पीर हरी।
हरी हरी बोलो हरी हरी॥
४—जै जै मनमोहन श्याम हरी-धन धन्य घरी यह धन्य घरी।
हरी हरी बोलो हरी हरी॥
५—छविरूप माधुरी दृगन भरी-मथुरेश ने इच्छा पूर्ण करी।
हरी हरी बोलो हरी हरी॥

[पद]

१—रसीला थेछो व्रज जनसुखकारी।
रंगीला छैला मोर मुकुट धारी॥
२—यह काया म्हाँकी व्रजकी थली जानो।
हियो म्हाको वृन्दावन जानो॥ रसीला०
३—गोप्यां छै ईंमें चित्त वृत्ति नाना।
करै छै थांका प्रेमसों गुण गाना॥ रसीला०
४—जीवन म्हाको थाँके छै आधीना।
आवोजी आवो नटवर रंगभीना॥ रसीला०
५—करोजी छैला गोप्यां संग थे रास।
पधारो थेजो सेवाकुंज छै पास॥ रसीला०
६—सुरत थांकी निरख म्हे सुख पास्यां।
बधाई देकें प्रेमकी निधि लास्यां॥ रसीला०

७– आवोजी म्हाँकी पलकाँ पै पग धरके।
मनास्यां थानैं चरणाँ में परके ॥ रसीला०
८–सुरतादासी दरसकी छै प्यासी।
मिलोजी आके श्रीमथुरावासी ॥ रसीला०

[हरिकीर्त्तन]

हरे कृष्ण हरे राम राधे गोविन्द ।
श्री कृष्ण चैतन्य प्रभु नित्यानन्द ॥
सारंगधर मुरलीधर सत्यचिदानन्द । श्रीकृ०
रघुपति यदुपति आनन्दकन्द ॥ श्री०
कौशल्यानन्द प्यारे वृन्दावनचन्द । श्री०
माधौ मुकुन्द भजो त्यागो छल-छन्द ॥ श्री०

[इसी के भजन पर पद]

हरे राम हरे कृष्ण लोकाभिराम ।
श्री गौर श्यामांग नित्यानन्द धाम ॥ १ ॥
सीतावर राधावर आरत हर नाम ॥ २ ॥
हरी बिन काहू छिन नाही आराम ॥ ३ ॥
लक्ष्मी नरसिंह पूरे भक्तों के काम ॥ ४ ॥

हरि हरि बोले होय मनको विसराम ॥ ५ ॥
मथुराके स्वामी प्यारे नामी सरनाम ॥ ६ ॥

[हरिकीर्त्तन]

जय जगमोहन जन सुखदाई ।
थोड़ो हिमसां चित्त लगाई ॥

१—केशव माधव यादव राई ।
बोले भव-दुखमां छुट जाई ॥
श्री हरि पुरुषोत्तम गुणगाई ।
लीजै मन इच्छा फलपाई ॥ जय०

२—नर हरि धरि धरि भज चितलाई ।
जन प्रह्लाद हेत प्रगटाई ॥
भज श्री राम कृष्ण रे भाई ।
शरणागत जन सदा सहाई ॥ जय०

३—नटवर गिरिधर श्री ब्रजराई ॥
जनहित सुरपति मान नसाई ।
मन-हर मुरलीधर छवि छाई ।
कालीमर्दन कुंवर कन्हाई ॥ जय०

४—त्रिभुवनपति ह्वै धेनु चराई ।
गोविन्द गोपालक कहलाई ॥
दीनबन्धुता जग दरसाई ।
जाय कौन विधि महिमा गाई ॥ जय०

५—गोपीजन प्रेमामृत दाई ।
रासविहारी पद सरसाई ॥
अच्युत अद्भुत सुन्दरताई ।
शोभा लखि शत मदन लजाई ॥ जय०

६—धन धन द्वारिकेश यदुराई ।
कीनी भक्त जनन मनभाई ॥
द्रुपदसुता को चीर बढ़ाई ।
नासी कुरु पुत्रन गुरुताई ॥

७—विप्र सुदामा निर्धनताई ।
मेटी कर सम्पत अधिकाई ॥
तजि दुर्योधन मेव मिठाई ।
भाजी विदुर दीन घर खाई ॥

८—श्री रघुनन्दन तन धरि आई ।
निगमागम मरजाद रखाई ॥

जलनिधि ऊपर सिला तराई ।
भिलनी दीनहि दीन वडाई ॥ जय०
६—अजामेल गणिका अधमाई ।
तनक नगिनी धन्य प्रभुताई ॥
भक्तवत्सल मथुरेश कहाई ।
तारे अमित पतित समुदाई ॥ जय०

श्री हरिकीर्तनम् ।

राम सिया राम सिया राम सिया राम ।
रामा जै रामा रामा राम सीता राम ॥
सीता राम सीता राम सीता राम रामा ।
रामा जै रामा रामा राम सीता राम ॥
श्यामाप्रिया श्यामप्रिया श्यामप्रिया श्यामा ।
श्यामा जै श्यामा श्यामाश्याम राधेश्याम ॥
राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम श्यामा ।
श्यामा जै श्यामा श्यामा श्याम राधेश्याम ॥

१—प्यारे नर तन लाभ यही है—लीजै युगलवर नाम । राधे०
२—गर्भ में करी प्रतिज्ञा भूल्यो—धिक् मन मूढ निकाम ॥ राधे०
३—सकलमनोरथ सिद्ध करन हित—कल्पतरू है हरि नाम । राधे०

४–तीनों ताप मिटैं हरि सुमिरे–नाम परम सुखधाम ॥ राधे०
५–उपजत प्रेम अखण्ड नामसों–मन पावै विश्राम । राधे०
६–नेह नीर नैननसों टपके–विलपत आठों जाम ॥ राधे०
७–नाम लिये नामी चलिआवै–मिलैं श्यामा अरु श्याम । राधे०
८–अधम उधारण नाम हरी को–सुगति देत सबठाम ॥ राधे०
९–गणिका अजामेल से पापी–पहुंचे हरि के धाम । राधे०
१०–कठिन योग यज्ञादिक साधन–सुलभ एक प्रभु नाम ॥ राधे०
११–मधुरे मधुरे मधुरे मधुरे–पियौ अमृत हरि नाम । राधे०
१२–सुधरे सुधरे सुधरे सुधरे–नामहितैं सब काम ॥ राधे०
१३–भजरे भजरे भजरे भजरे–हरि पद आठों जाम । राधे०
१४–तजरे तजरे तजरे तजरे–क्रोध लोभ मद काम ॥ राधे०
१५–श्री मथुरेश नाम जग पावन–मन भावन अभिराम । राधे०

[हरिकीर्त्तन]

हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ बोलौ-
बोलौ जी हरि हरि ॐ हरि ओम्

१–हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ माधौ–माधौ जै माधौ हरि ओम्
२–हरि ॐ हरि ॐ हरि ॐ केशौ–केशौ जै केशौ हरि ॐ हरि०
३–हरी हरत दुख शरणागत के–महामन्त्र हरि ओम् हरि०
४–जरत पाप हरि नाम अग्नि से–द्रवत हियो जिमि मोम हरि०

५--ओंकार हीतें सब सृष्टी--हरि हर अज रवि सोम् ॥ हरि०
६--प्रेम तरंग हिये लहरावे--हरषैं तनके रोम ॥ हरि०
७--नारदशारद बीन में गावत--तनन तनन दिरना त्रोम् ॥ हरि०
८--हृदय कमल विकसत हरि बोलै--फलत कहैं जय ओम् ॥ हरि०
९--हरि बोले हरि मिलत सहजही-सुलभन किये तप होम ॥ हरि.
१०--हरि व्यापक चर अचर जगत में -हरिमय जल थल भोम ॥ हरि.
११--श्री मथुरेश नाम को सुनके-मुदित सकल महि व्योम ॥ हरि०

[संक्षिप्त हरि कीर्त्तनम्]

राम सिया राम सिया राम सिया रामा ।
रामा जै रामा रामा राम सीता राम ॥
सीता राम सीता राम सीता राम रामा ।
रामा जै रामा रामा राम राम सीता राम ॥
श्याम प्रिया श्याम प्रिया श्याम प्रिया श्यामा ।
श्यामा जै श्यामा श्यामा श्याम राधेश्याम ॥
राधे श्याम राधे श्याम राधे श्याम श्यामा ।
श्यामा जै श्यामा श्यामा श्याम राधे श्याम ॥

हरि ओं हरि ओं हरि ओं बोलौ मन पावै विस राम। राधे०
हरि ओं हरि ओं हरि ओं माधौ-भज मन आठों जाम॥ राधे०

हरि ओं हरि ओं हरि ओं केशौ-नाम परम सुख धाम। राधे०
श्री मथुरेश नाम जग पावन-मन भावन अभि राम॥ राधे०

[तथा हरि कीर्त्तन]

१-जय सत्य ज्ञान सुख रूपधरे श्रीराम कृष्ण गोविन्द हरे।
२-जो अलखअगम मन बुद्धि परे, सोइ करूणा कर तन धर उतरे॥
३-जब प्रेम तरंग हिये लहरे, तब निगुन सगुन सब भेद टरे।
४-नित नेह नीर जब दृगन भरै, प्रिय तमपुरुषोतम ताहि वरै॥
५-प्रिय ध्यान धरत तन सुध बिसरै, मनमोहन धायके अंक भरै।
६-हरि नामसुधारस पान करै, मथुरेश पिया उरमें विहरै॥

[हरि कीर्त्तन गुजराती गरवी की चाल में]

हरी के प्रेमी हरि हरि हरि बोलो-
रतन प्रभु नाम है अनमोलो॥
केशव केशी माधो वश्रोमाधो-
प्रेम धन हरि नामहि साधो। हरि.
श्रीराधे कृष्णा राधे कृष्णा राधे श्याम-
श्री सीता राम सीता राम श्रीराम।
श्री नर हरि नर हरि दुख हारी-
जगतपति शुभ गति सुख कारी। हरि.

श्री नारायण नारायण गुण गावो-
रम पति अति हित सौं ध्यावो । हरी०
रसीले प्यारे युगल मनोहर अंग-
सु छवि धारे रहैं सदा जन संग । हरी०
मथुरा स्वामी करुणा दया धामी-
हिये की जानै प्रभु अन्तरजामी । हरी०

—:(०):—

हरिकीर्त्तन तमाशे की चाल में ।



श्री हरि नाम परम सुख सार-भजलो हरिजन बारंबार ॥
१—दीन बन्धु करुणा के सिन्धू जन दुख भंजन हार ।
अधम उधारण ताप निवारण भुक्ति मुक्ति दातार ॥ श्रीहरि०
२—श्री नरसिंह दयालु विश्वपति पालन पोषण हार ।
थंभ फार प्रगटे जन के हित तनक न करी अबार ॥ श्रीहरि०
३—श्री रघुनन्दन असुरनिकन्दन, भंजन धरणी भार ।
व्याध गीध शवरी से नीचहु, कीने भवसें पार ॥ श्रीहरि०
४—त्रिभुवन बन्दन यशुदानन्दन ब्रज जन प्राण अधार ।
विदुर सुदामा सुखप्रद द्रोपदि लज्जा राखनहार ॥ श्रीहरि०
५—शरणागत वत्सल कलिमलदल छलबलमेटनहार ।
गोविन्द गोपीनाथ वेणुधर गिरधर रस भण्डार ॥ श्रीहरि०

६—अजामेल गणिका से पापी दीने छन में तार ।
नारायण जगदीश कृपानिधि जन दुख देत निवार ॥ श्रीहरि०
७—मथुरापति बखशै चरणन रति सांवरिया सरदार ।
नाम लियें निश्चै ही धावै भेटै भुजा पसार ॥ श्रीहरि०

हरि कीर्त्तन रसीया की चालमें ।

हरि सुमिरन अति मंगलकारी । हरि०

१—नारायण पुरुषोत्तम जगपति, केशव माधव अघहारी ॥ हरि०
२—श्रीगोविन्द यशोदानन्दन, दीनबन्धु जन हितकारी ॥ हरि०
३—राधावर मनमोहन नटवर, जन दुख भंजन गिरिधारी ॥ हरि०
४—वंशीधर भवताप विभंजन, मन रंजन हरिभय हारी ॥ हरि०
५—गोपीनाथ राधिका वल्लभ व्रजपति हितकर वनचारी ॥ हरि०
६—वासुदेव बलवीर नरोत्तम श्रीगोपाल सुछ विधारी ॥ हरि०
७—गोकुलेश श्रीनाथ दयानिधि नवलकिशोर मनोहारी ॥ हरि०
८—नागदमन घनश्याम रसिकवर शोभाधाम मुकुटधारी ॥ हरि०
९—रघुवर राम जानकी वल्लभ दशरथ नन्दन असुरारी ॥ हरि०
१०—सीतापति अवधेश धनुर्धर धर्मधुरन्धर सुखकारी ॥ हरि०
११—शरणागत वत्सल नरहरिप्रभु-मथुरापति पर बलिहारी ॥ हरि०

श्री हरिकीर्त्तन १०८ नाम की माला।

श्रीहरि पुरुषोत्तम गुण गाई जीवन सफल करो रे भाई ॥

१ २

१—नारायण जगदीश विश्वपति पूरणब्रह्म व्याप्त सब ठांई ॥

३ ४ ५ ६ ७

लोकनाथ दुखभंजन मोहन सुखद मनोहर भक्तसहाई ॥

८ ९ १० ११ १२ १३

२—मनभावन पावन श्रीवामन जनरंजन त्रिभुवन के साँईं ॥

१४ १५ १६ १७ १८

दीनबन्धु करुणा के सागर दीनानाथ कृपालु गुसाईं ॥

१९ २० २१ २२ २३

३—श्रीनरसिंह असुरमदगंजन जनरक्षक अतुलितप्रभुताई ॥

२४ २५ २६ २७

भवभयभंज आनँदघन प्रभु शरणागतवत्सल हितदाई ॥

२८ २९ ३० ३१ ३२

४—राघव राम जानकीजीवन सीतापति धनुधर रघुराई ॥

३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८

श्रीअवधेश कौशल्यानन्दन असुरनिकन्दन अमितबड़ाई ॥

३९ ४० ४१ ४२

५—वासुदेव यादव सुन्दरतन देवकिनन्दन श्रीयदुराई ॥

४३ ४४ ४५ ४६ ४७

व्रजपति गिरिधर मदनमानहर राधावल्लभ श्याम कन्हाई ॥

४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३

६—गोकुलेश कालीमदमर्दन रासविहारी छविसरसाई ॥

५४ ५५ ५६

केशव कंसनिकन्दन दुखहर गोपीनाथ त्रिलोक रिझाई ॥

५७ ५८ ५९ ६०

७—माधव श्रीपति दानी ज्ञानी सत्यरूप शोभा अधिकाई ॥
६१ ६२ ६३ ६४ ६५
मोरमुकुटधर कमलनैन शिशुवपुधर गोपति धेनुचराई ॥
६६ ६७ ६८ ६९
८—भवनिस्तारण पतितउद्धारण तारण सुवेषसुहाई ॥
७० ७१ ७२ ७३
नटवर नटनागर करुणाकर प्रेमडोर में सहजबंधाई ॥
७४ ७५ ७६
९—इन्द्रदमन व्रजरक्षक प्रियतम ललितत्रिभंगी मदनलुभाई ॥
७७ ७८ ७९ ८० ८१
बांके चतुर नेहरसछाके करें प्रेम वश जनसेवकाई ॥
८२ ८३ ८४
१०—प्रेमविवश आधीनभक्त के क्षमाशील शुभगुणसमुदाई ॥
८५ ८६ ८७ ८८
नन्दकिशोर यशोदानन्दन जगवन्दन वन्दों सिरनाई ॥
८९ ९० ९१
११—अलख अगोचर निर्विकार गुणधाम लोकअभिरामै गाई ॥
९२ ९३ ९४ ९५ ९६
गोविन्द श्रीगोपाल नवलवपु राधारमण मनोजनसाई ॥
९७ ९८ ९९ १०० १०१
१२—मायाधारी सर्वकलानिधि जाकीमायाजगत भ्रमाई ॥
१०२ १०३
इन्द्रियमनपर मोहन चितहर कृष्णचैतन्य देववलभाई ॥
१०४ १०५ १०६ १०७ १०८
१३—एक सौ आठ नाम की माला रचि मथुरा चरणन वलजाई ॥
गावै सुनै लहै परमानंद श्रीमथुरेश भक्ति ले पाई ॥

शुभ मिति फाल्गुन शुक्ला १५, संवत् १९ ७८

* श्रीहरिः *

(रसिया की चाल में हरि कीर्तन)

जोसुख प्यारे कृष्ण भजन में सोतो तीन लोक में नाँहि।
१
हरि जगदीश श्याम गुणधामी रे-पुरुषोत्तम करुणामय स्वामी रे।
२ ३ ४ ५ ६ ७ ८
अन्तर्यामी गिरधर नामी जस छायो जगमाँहि॥
९ १० ११
जो सुख० ॥ १ ॥
गोपीनाथ राधिका जीवन, नन्दनदन नटवर मधुसूदन।
१२ १३ १४ १५ १६
कालीदमन कंस मद मर्दन छबिलख मदन लजाँहिं॥
१७ १८
जो सुख ॥ २ ॥
गोकुलेश गोपाल विहारी रे-रासविलासी रसिक मुरारी रे।
१९ २० २१ २२ २३ २४
मुरलीधारी श्रीवनवारी दामोदर कहिलाँहि॥
२५ २६ २७
जो सुख ॥ ३ ॥
राम सियावर अवध दुलारे रे-भरतभ्रात सारंगधनु धारे रे।
२८ २९ ३० ३१ ३२
दशरथ नन्दन प्राणअधारे सुर मुनि सुजस सराँहि॥
३३ ३४
जो सुख ॥ ४ ॥

कमल नैन घनश्याम मनोहर, जानकी जीवन क्रीटमुकुट धर ।
३५ ३६ ३७ ३८ ३९
दशमुखदलन ललन जगपालन अशरणशरण कहाँहि ॥
४० ४१ ४२ ४३
जो सुख ॥ ५ ॥

रघुनायक यदुपति दुखहारी रे-श्री नरसिंह भक्तभयहारी रे
४४ ४५ ४६ ४७ ४८
मायाचारी सब सुखकारी सुमिरे भवदुख नाँहि ॥
४९ ५०
जो सुख ॥ ६ ॥

भक्तवसल जसुमत के लाला रे-करें सदा सन्तन प्रति पाला रे ।
५१ ५२
द्वारकेश दृगबाहुबिशाला मथुरा बल बल जाँहि ॥
५३ ५४
जो सुख ॥ ७ ॥

॥ श्री हरिः ॥

होली हरि नाम संकीर्तन की———काफी

नीकी श्री हरि नाम की होरी

ब्रह्म सच्चिदानन्द जगत पति जो सब माँहि रम्योरी।
राम कृष्ण माधव मधुसूदन नाम से प्रगट भयोरी॥
ताहि निसदिन सुमिरौरी—नीकी॥ १॥

काम क्रोध मद लोभ मोह छल मल को ढेर लग्योरी।
हरी नाम कीर्तन चिनगारी धरत हि सकल जरयोरी॥
जान भये विमल हियोरी—नीकी॥ २॥

नारायण केशव पुरुषोत्तम नाम की केसर घोरी।
प्रेम रंग मन मटकिन भरभर प्रीतम अंग भिजोरी॥
रंग बरसै चहुंओरी—नीकी॥ ३॥

राधावर गिरधर मुरलीधर श्याम नाम रूरोरी।
श्री गोपाल गुलाल हाथ, बल बीर अबीर की झोरी
भरौ अनुराग कमोरी—नीकी॥ ४॥

रघुवर सीतावर सारंगधर बारम्बार रटौरी।
नाम झांझ डफ बाजे बजें लोक लाज तजदोरी
पिया बस में करलोरी—नीकी॥ ५॥

हिरनाकुश प्रहलाद से पूछी राम बता किस ओरी ।
तोमें मोमें खड्ग खंब में कह्यो राम सब ठौरी ॥
खंब ही तें प्रगटोरी—नीकी ॥ ६ ॥

श्री मथुरेश नाम की होरी खेलौ हिल मिल गोरी ।
करें अवश्य कृपा नंदनदन श्री वृषभान किशोरी ॥
परम रसरंग झकोरी—नीकी ॥ ७ ॥

(गणगौर की तर्ज पर हरि कीर्तन)

गोविंद गुण गाओजी सुगम येही मारग गहो कर गौर ।

निगुन सगुन दोउ रूपरंगीलो—राम रमै सब ठौर ॥
ब्रह्म सच्चिदानन्द विष्णु हरि—नाम अनन्त निहोर ।

वासुदेव यदुपति मधुसूदन—रटिये सायं भोर ॥
गिरिधर राधावर नटनागर—गोपियन को चित चोर ।

रघुवर धनुधर सियवर सुन्दर—भजिये सदा कर जोर ॥
रासविलासी प्रेमप्रकाशी—रसिकन को सिर मोर ।

नन्दनदन श्रीकृष्ण सुघरतन—मोहन माखन चोर ॥
श्री मथुरेश भक्त भयहारी—बंध्यो प्रेम की डोर ।

श्री मथुरेश चरणवन्दना स्तोत्र—

बोलो श्री कृष्ण चरण ताप हरण की जय हो।
दीन दुखियों के शरण मोदकरण की जय हो॥ १॥
प्रगटी जिन से पतित पावनी श्री माता गङ्ग।
सर्व संकष्ट हरण विश्व भरण की जय हो॥ २॥
जिस चरण रज से तरी नारि अहल्या तत्काल।
धन्य भव सिन्धु तरण चारु वरण की जयहो॥ ३॥
जिन के छूते ही हुए मुक्त वो यमलाअर्जुन।
दामोदर भेषधरण लीला करण की जय हो॥ ४॥
काली के फन पै किया नृत्य दिखाया कौतुक।
गोप वन वनविचरण श्याम चरण की जयहो॥ ५॥
जिन के बल और भरोसे पै हैं निर्भय हरिजन।
जन के निस्तार करण भय के हरण की जय हो॥ ६॥
जिन के सुमिरन से मिटे सोग भयानक भवरोग।
फांसी कट जाय तुरत जन्म मरण की जय हो॥ ७॥
जिन की सेवा में अचल हो रहै चपला लक्ष्मी।
सुख सदन सर्वदा दारिद्र दरन की जय हो॥ ८॥
जिन को सीने से लगा गोपियां कृतार्थ हुईं।
रास रस उपजावन त्रास हरण की जय हो॥ ९॥
रुक्मणी द्रोपदी गज रक्षा को धाये झटही।
ऐसे अशरन के शरन सुखवितरण की जय हो॥ १०॥

धन्य जन ध्यान में धारें जो हिये में उन को ।
धन्य धन धन श्री मथुरेश चरन की जय हो ॥ ११ ॥

सेवक की सुध लीजै रे श्याम सलौने—

मानौ या न मानौ तुमपै विना दाम में विकानो-करुणानिध
करुणा करके दर्शन दीजे रे श्याम सलौना-सेवक की०—

(इस के वजन पर दूसरा पद)

दर्शन की हम प्यासी रे रास विलासी-दर्शन की०—
सांवरी सलौनी झांकी ललित त्रिभंगी बांकी-दिखला कर
धीरज दीजै हो सुख रासी-रे रास बिलासी-दर्शन की हम०—१
प्राण को रखैया तूहि टेक को निभैया तूही-दीनन दुख भंजन
मोहन निधवनवासी-रे-रास विलासी—दर्शनकी०—२
नैना तोरे रतनारे रसिक रसीलेप्यारे—घायल कर डारे तन
मन सुरता नासी—रे—रास विलासी—दर्शनकी०—३
फाटत विरह में छाती पल हु न कल आती—घबराती हूं लल-
चाती चित्तहुलासी—रे—रास विलासी—दर्शनकी०—४
चेरी हूं मैं तेरी भोरी राख पिया लज्जा मोरी—थोरी तौ महर
नजर कर मथुरा बासी—रे—रास विलासी—दर्शनकी०—५

(इसी तर्ज पर दूसरा पद)

घट घट की तुम जानो हो नन्द दुलारे ॥ घट २ की०
चेरी हूं तिहारी प्यारे दया दृष्टि मोपै डारो
शरणागत चरणों परके कितहुन जानो हो ॥ नन्द १
तारो या नतार अबतो विना तोरे ना सहारो
भवसागर नैया डग मग नाँहि ठिकानो हो ॥ नन्द २
कामी हूं मैं क्रोधीलोभी दुराचारी हे अघहारी
निज प्रणो को नाथ सुमरि के अपनो मानो हो ॥ नन्द ३
तेरो ही कहाऊं किसको विथा जाय मैं सुनाऊं
मथुरा पति दुख को हरता हम पहचानो हो ॥ ४

(होली क़व्वाली में)

होली खुल खेलौ री चल कर जहां दिलबर अपना ॥
दारी दुनियां है तमाशा ये नहीं घर अपना ॥ १ ॥
छल कपट का जो है घूंघट वो हटालो प्यारी ॥
प्रीत की साड़ी नवल प्रेम है ज़ेवर अपना ॥ २ ॥ होली०
होगये वृक्ष भी तज लाज नगन फागन में ॥
नाच गा तूभी रिझाले पिया गिरधर अपना ॥ ३ ॥ होली०
तन पै सुर्ता की लगा उसके तू तक पिचकोरी ॥
अंक भर जोडले कर चरणों में धर सर अपना ॥ ४ ॥

रंग अनुराग से जब तुझ को करे तर प्रीतम ॥
जान तब रुतबा हुआ सब सेरी क़रतर अपना ॥ ५ ॥
जिस की होली पिया मथुरेश से ऐसी होली ॥
कर लिया उसने सहज ही पिया नटवर अपना ॥ ६ ॥

(होली)

हो छाई रसीली फाग रंगीली व्रजके सुन्दर बागन में ॥ हो०—
जमा है एक तरफ़ लाल का सखा मंडल ॥ अड़ा खड़ा है उधर लाडली का गोपी दल ॥ अबीर और गुलालों से छाये हैं बादल ॥ उमंग से भरे दोनों तरफ़ के हैं दंगल ॥ हो, लता पता सब जोवन-माती रंग राती हैं फागन में ॥ हो छाई रसीली०—

अनेक रंग भरे हौज़ जिन में फ़व्वारे ॥ लगे हैं छूटने बहने लगे हैं पत नारे ॥ बजें हैं डफ़ कहीं शहनाई ढोल नक़्क़ारे ॥ बिसर के देह की सुध नेह मगन हैं सारे ॥ हो होरी के रसिया नाचत गावत नाना रस के रागन में ॥ हो छाई०—

मचाई दोनो ही टोली ने रसकी होली है ॥ युगल में बात जो होनी थी वोभी होली है ॥ अधर सुधा पिया प्यारी ने मिल अहोली है ॥ हर एक मुख से निकलती ये तान होली है ॥ हो मथुरा पति राधा गोविन्द रस रसिकन पायो भागन में ॥ हो छाई रसीली०—

(मन को मनमोहन सिवा दुनिया में कुछ भाता नहीं)

इस के वज़न पर

[होली]

फूली देख बसंत बन बन मन हैं ललचाने लगे।
दिन ये होरी खेल के पिय बिन वृथा जाने लगे ॥
मच रही है धूम घर घर फाग की अनुराग से।
नैन विरहिन के पिया बिन नीर बरसाने लगे ॥
ढफ़ बजाते नाचते फिरते हैं रसिया हर तरफ़।
पंछी भी कुंजों में होरी मस्त हो गाने लगे ॥
मन की मटकी प्रेम के रंग से भरै जब तक नहीं।
श्याम रसिया प्रेम के क्यों कर इधर आने लगे ॥
पहुंची जब सुर्ता वो दूती बन के मनमोहन के पास।
हाल मेरा सुन के खुद भी कुछ तो शरमाने लगे ॥
होरी ज्वाला उठ रही है तन के हर इक रोम से।
ऐसा सुन वो राधे राधे बंसी में गाने लगे ॥
बन गये भारी निठुर मथुरा में जा मोहन पिया।
कर के चिकनी चुपड़ी बातें प्रीत दरसाने लगे ॥

॥ पद ॥

पल नहि कल मोय पियके दरस बिन ।

१–गिन गिन कटी कठिन दिन रतियां ।
जी न सकूं वाके दरस परस बिन ॥ पल०

२–योग से अधिक वियोग सुहायो ।
रह न सकत दृग छिनहु तरस बिन ॥ पल०

३–सुनियत हैं करुणानिध प्रियतम ।
रुक न सकत भये काहुके बस बिन ॥ पल०

४–लोचन मीन विकल अति प्यासे ।
कैसे रहैं पिय दरस के रस बिन ॥ पल०

५–प्रेम के बस मथुरेश दयालू ।
मिलै न गान किये वाके जस बिन ॥ पल०

[ग़ज़ल]

विनय सुनलो हमारी नाथ करुणा सिन्धु दुखहारी ।
विदित है आपकी अनुपम जगत में भारी दातारी ॥ १ ॥
मेरा दर्जा है सबसे बढके पतितों में सुनौ स्वामी ।
पतित पावन है तुमसा कौन दुखहर दीन हितकारी ॥ २ ॥
तुम्हरी भक्ति करने से तरे भव सिन्धु से लाखों ।
विना भक्ती मुझे तारौ तौ होगा जस बड़ाभारी ॥ ३ ॥

पड़ो मँझधार में नैया न कोई पार लगवैया ।
इधर छाई अविद्या की भयानक रैन अँधियारी ॥ ४ ॥
कृपादृष्टी जो होजाये ये बेड़ा पार लगजाये ।
करो रोशन प्रभू मथुरेश जल्दी अपनी सरदारी ॥ ५ ॥

(ग़ज़ल)

बोलो श्रीनाथ दया धाम की जैहो जैहो ।
मन हरन चारु वरन श्याम की जैहो जैहो ॥ १ ॥
सात दिन उंग्ली पै जिस बालने धारा गिरवर ।
सुर दमन श्याम विजित कामकी जैहो जैहो ॥ २ ॥
शीस पै मोरमुकुट करमें लकुट पीत सुपट ।
वीरभट नागर नट नामकी जैहो जैहो ॥ ३ ॥
निकला गिरराज से पधराया श्रीवल्लभने ।
धन्य वो ठाम है ब्रज धामकी जैहो जैहो ॥ ४ ॥
पा नही सकते पता पचके थके ब्रह्मादिक ।
प्रेम से बस किया ब्रजबाम की जैहो जैहो ॥ ५ ॥
राजपूताने में आये किया पावन यह देश ।
धन्य मेवाड रुचिर ठाम की जैहो जैहो ॥ ६ ॥
जिसके दर्शन से मिटैं घोर महा तीनो ताप ।
प्यारे श्रीनाथ जु अभिराम की जैहो जैहो ॥ ७ ॥

धन्य गोस्वामी महाराज श्रीगोवर्धनलाल।
लाल सुकुमार उदर दाम की जैहो जैहो ॥ ८ ॥
दे दरस मुझको भी श्रीनाथने अपनाय लिया।
धन्य मथुरेश दिलाराम की जैहो जैहो ॥ ९ ॥

(दोहाष्टकम्)

१–श्रीहरिचरणन मन दियो पूरण तिन के काज।
अन्य जतन सन्तन कहे कठिन विघन के साज ॥
२–नटखट पियको ना मिलै खटपट से कछु अन्त।
उलट कपट घूंघट झपट झट पट भेटैं कन्त ॥
३–तप साधो बाँधो सुरत आराधो सुर द्वार।
बिन माधो उतरै नहीं काँधों से भव भार ॥
४–चक्कर खावै चरख नित चरचत करत पुकार।
इम बिन हरि चर्चा रुचे चौरासी संचार ॥
५–गंग करै अघ भंग तिम हरिजन को सत्संग।
मन मतंग ह्वै पंग तब अंग रचै हरि रंग ॥
६–गुल गुलमें हरि रम रहा अतुल रूप कुल नूर।
बुल बुल मन चुल बुल न कर कुल में निरख हजूर ॥
७–ग्राह गहे गज नाह को और न पाई राह।
वाह वाह हरि नाम गुण तुरत गही हरि बांह ॥

८—प्रेम लेश उर ऊपजे मिटै सकल जग क्लेश।
द्वैश देश भटकै वृथा सुखद सदा मथुरेश॥

(सोरठा अष्टक)

१—इधर उधर न निहार नर, यदि पर सुख चहत है।
श्री गिरधर उर धार, सुघर तरैं भव सुगम नर॥
२—हरि पद कमल पराग, चाहत यदि अलि मन चपल।
विषय सुमन रस त्याग, गाव राग अनुराग युत॥
३—शरण तिहारी नाथ जो अनाथ अस उच्चरहि।
धरत माथ पर हाथ हरष साथ यदुनाथ हरि॥
४—मंद छाँड छल छंद भज हरि परमानन्द पद।
कोकाटै भवफन्द नन्द नदन ब्रज चन्द बिन॥
५—परत कुमति वस जीव जगत कूप हरि रति बिना।
सुरत करत नहि पीव जत मत साधे प्रीति बिन॥
६—अहं अहं मत भाष जाय साख अभिमान तैं।
अजा पुत्र शत लाख भये राख में में कहे॥
७—एक निशाना जान, यदपि बाण धारी त्रिविध।
इष्ट एक पहि चान भेद बुद्धि भयदुखद लखि॥
८—जो सम दृष्टि हमेश सुखी रहै प्रिय सकल को।
सबमें लखि मथुरेश राग द्वेष तजि भजहु हरि॥

मंजु छन्दाष्टक।

सन्मथलज्यो गोपिका मोहीपरे प्रेमके फन्दे ।
थक्के चंद्र सुर छके मधुर सुन मुरली बोल अमन्दे ॥
हेब्रजचंद भये हमसब तज तव पद रज के बन्दे ।
प्यारम नकर कर करम चितै इत प्रीतम आनदकन्दे ॥

मजेदार दिलदार अरज़ इक सुनौ गौर कर मेरी ।
थमैनही दिल व्याकुल तुम विन विरह अगिन अति घेरी ॥
हेमन मोहन अधर सुधारस सींचौ धाय सवेरी ।
प्याब्दन निकसै जियरा विकसै हा हा खाऊं तेरी ॥

मदनमनोहर मोरमकुटधर मेहर नज़र कर हेरौ ।
थकितभयो मन प्रीतको बंधन हाथ गरे बिच गेरो ॥
हेहजूर पुरनूर दूर कर जगत जाल उर केरो ।
प्याब्दबोल दिल खोल मोल बिन यह जन चेरो तेरो ॥

ममअंखियन में बस्यो सलौने तव तनु मृदल मुलायम ।
थलजल पवन गगन सब ठांई यदपि रूप तव कायम ॥

रे चंचल किस भांत हिये विचतू रह सकै मुदायम ।
आकल खूब महबूब में ध्याऊं तेरी प्रात अरू सायम ॥
मनोहारि तन श्याम नवल क्या जोबन झलक रहाहै ।
श्ररपिनिखिष सोभा निधि तोमैं विधि हूचकित अहाहैं ॥
रे सुन्दर जादूगर तैं यह कौतुक रच्यो कहाहै ।
आकलदेख तव अकल होत गुम अचरज यही महाहै ॥

मन माणिक विवेक धन तुझपर सर्वस वा दियाहै ।
शूणी आशा पर तन छप्पर टिक अवलम्ब लियाहै ॥
रे दिलवर देदरस दया कर क्यों दिल सख्त कियाहै ।
आर्त मुहब्बत पूरी कर तू मेरा प्राणपियाहै ॥

मरज इश्क बढगया तलब में आशिक रोता डोलै ।
थर थरात मुख बात न निकसै आंखें कैसे खोलै ॥
रे रस वैद मरीज ये तेरा दास भया बिन मोलै ।
आर्वत पिला जिला आशिक को दिखला रास किलोलै ॥

मत तरसावै श्याम दरस रस प्याला दीजै।
थुकथुक करि हैं लोग कौन फिर तोय पतीजै॥
हे अनाथ के नाथ हाथ हमरो गह लीजै।
शरन परन की ज्ञान विरद निज पालन कीजै॥

[सवैया अष्टक]

१—दीन मलीन महा मतिहीन मैं पापन पीन अलीन अनारी।
आप प्रवीन नवीन सदा रस लीनहौ भक्त अधीन बिहारी॥
मेरे अनेकन जन्मके औगुन देख कहा भयो सोच है भारी।
वीर दयाके प्रसिद्ध अहो मथुरेश कहौ कैसे हिम्मत हारी॥

२—बालक काहु को जात गढा बिच देख के पंथि तुरंत बचावै।
आपुने पुत्र की ऐसी दशा लखि कौन पिता नर खावन धावै॥
तोसो पिता भव सिन्धु में मोसे अजान को डूबत नाँहि रखावै।
मौन गहे मथुरेश विचारिये लोक की दृष्टि में कौन लजावै॥

३—नीच महा गुण हीन हु जान के मोहि तजे न कदापि सरैगो।
पाप हरेतैं कहात हरी तव नाम महातम जान परैगो॥
चन्दन देत सुगन्ध सबै कहा सर्पहि देख दुराय धरैगो।
जो मथुरेश न मोय द्रवौ करुणा कर नाम कौ को उचरैगो॥

४ कौन तपावृत कौन अजामिल यज्ञकिये गणिका कब स्वामी ॥
व्याधमें कौन आचार विचार रहे कह दीजिये अन्तर्जामी ॥
भीलनिने कव वेद पढे कहा सुकृत हस्ति किये सुखधामी ॥
साधन हीन ये तारे सबी मथुरोकी निहारत क्यों प्रभु स्वामी ॥
५ तारे हैं आपने भक्त हजारन जेते आकाशमें दीखत तारे ॥
प्यारे लगे सब वे तुमको तुमहू उनको प्रिय ज्यों दृगतारे ॥
लेश नही तव भक्तिको मोमन मायाके लागरहे दृढ तारे ॥
कीरत है मथुरेश बडी मुझ भक्तिविहीनको पार उतारे ॥
६ पापकरे जिन धापके आपने माफ करे जब पा पकरे हैं ॥
जोनगहै मथुरेश पदाम्बुज जोन गहै भवचक्र परे हैं ॥
मेरे अनेकन जन्मके औगन देखके काहेको नाथ डरे हैं ॥
मारो उबारो जो चाहै करो शरणागत हैं हम पांव परे हैं ॥
७ गौतमनार पखान निहारके तारदई करुणा उर धारी ॥
वानर तारे मलाह से नीच उधारे हमारे बढी रुचि भारी ॥
चित्त पखान समान धिषै विष भोग रतो पशुतुल्य हमारी ॥
कर्म चण्डालसे नोच मेरे अब क्यों मथुरेश न म्हेर तिहारी ॥
८ श्रीनंदनन्दन आनदकन्द सुनो बिनती जगदीश हमारो ॥
दीन के नाथ अधीन के साथ नवोन नही बखसोस तिहारी ॥
लाखनके अपराध छमे प्रण राखनको जगमें अघ हारी ॥
पापविशेष मेरे मथुरेश निहारके क्यों निज टेक बिसारी ॥

रामभजौ कृष्ण भजौ लाज तजौ प्यारे ॥
नाम सुधा पीके मगन होजा मतवारे ॥
१ तात भ्रात जात पांत पैंड़हू न साथ जात—
सूने हाथ चलेजात राव रंक सारे ॥ राम भजौ०
२ जो हरि पद शरण जाय ममता जगकी मिटाय—
ताके नितही सहाय मोर मुकट वारे ॥ राम०
३ माधव है सांचो मीत जनसौं अति राखै प्रीत—
वाहो की कर प्रतीत च(ण शरण जारे ॥ राम०
४ हरिसों जो प्रीत करै तासौं वह नाँहि टरै
सारे ही कष्ट हरै गोविंद गुण गारे ॥ राम०
५ पल पल दृग झरै नीर दरस हेत मन अधीर—
सालै उर विरह पीर मिलत धाय प्यारे ॥ राम०
६ अनुपम मथुरेश मीत जमसे नहि रंच भीत
गावो हरि प्रेमगीत परमानंद पारे ॥ राम०



शुद्धि पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
[illegible]	२	दयोगे	द्वोगे
१३	३	मीहन	मोहन
[illegible]	१३	काला	काली
१७	१४	शयामा	श्यामा
„	१५	„	„
[illegible]	१२	रामसीना	सीता
[illegible]	१३	माधोव	मांधव
२१	१	नरायन	नारायण
„	१७	मउदल	मलदल
२२	७	हारि	हारी
२३	८	भंज	भजन
२४	३	तारण	तारण तरण
२७	५	भयारी	भयोरी
„	८	जरया	जरयो
३१	८	प्रणो	प्रण
३५	२	विद्‌या	विद्या
३७	४	निहार	निहारू
„	„	नरू	नर
३८	१२	केरी	झेरी
३९	४	निखिष	निखिल
„	७	घा	चार
४०	३	तीय	तोय
„	६	दोन	दीन
„	१३	पौन	मौन